Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

सरकारी और निजी माध्यमिक स्कूलों में स्कूल के इनपुट का अध्ययन

Arpana Kumari[1]* Dr. Nidhi Agarwal[2]

[1] Research Scholar, Kalinga University, Raipur

[2] PhD Supervisor, Kalinga University, Raipur

सार - ***यह पेपर भारतीय संदर्भ में स्कूल के माहौल और छात्र परिणामों के अध्ययन में विभिन्न शोधों और उनके तरीकों में पैटर्न को स्पष्ट करने और पहचानने की ओर झुका हुआ है। दशकों के शोध ने यह समझने में मदद की है कि कैसे स्कूल का माहौल छात्रों की समग्र उपलब्धि को आकार देता है। यह हमें एक समझ देता है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि संबंधपरक है और स्कूल का माहौल ही बहुआयामी है। इस पेपर का केंद्र बिंदु यह समझना होगा कि कैसे स्कूल के माहौल और छात्र परिणामों के बीच संबंधों की पहचान करने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है। यह मूल्यांकन करेगा कि नेतृत्व का व्यवहार स्कूल के माहौल को कैसे प्रभावित करता है, शिक्षक का व्यवहार स्कूल के माहौल को कैसे प्रभावित करता है, विभिन्न प्रकार के स्कूल का माहौल छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को कैसे आकार देता है, शैक्षणिक तनाव, मानसिक स्वास्थ्य और स्कूल की प्रभावशीलता कैसे संबंधित है, और छात्रों की धारणा की गतिशीलता और स्कूल के माहौल के संबंध में समायोजन।***

कुंजीशब्दः स्कूल का माहौल, शिक्षक का व्यवहार, मानसिक स्वास्थ्य

----------X----------

प्रस्तावना

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। यह भौतिक और मानव विकास का प्रबल स्रोत है। विशेष रूप से श्माध्यमिक शिक्षाश् जीवन के लिए एक अनिवार्य पासपोर्ट है जिस पर आगे की शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता निर्भर करती है। राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा पर सभी समितियों और आयोगों ने बड़े पैमाने पर व्यक्ति और समाज की भलाई में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया है। भारत इस समय वैश्वीकरण की ओर तेजी से बढ़ रहा है। नब्बे के दशक ने अधिकांश आर्थिक गतिविधियों के उदारीकरण का अनुभव किया है। नई सहस्राब्दी में, हमने अपनी आर्थिक नीतियों में दूसरी पीढ़ी के बदलाव पहले ही शुरू कर दिए हैं। सरकारी क्षेत्र से निजी क्षेत्र में बदलाव दिन-ब-दिन गति पकड़ रहा है। इसलिए, शिक्षा के क्षेत्र में भी, निजी क्षेत्र अपने इनपुट (गुणवत्ता) के कारण फल-फूल रहा है, जैसा कि अधिकांश माता-पिता मानते हैं। माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए सर्वोपरि है। ऐसे में यह भारत में एक प्रमुख चिंता का क्षेत्र है। यद्यपि माध्यमिक शिक्षा, वर्तमान में शिक्षा में एक प्राथमिकता वाला क्षेत्र है, यह क्षेत्र शैक्षिक अनुसंधान में उपेक्षित रहा है। विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक-स्थिति (एस-ई-एस), वर्ग के आकार और उपलब्धियों जैसे अन्य चर के संबंध में स्कूल इनपुट के क्षेत्र पर भारत में बड़े पैमाने पर शोध नहीं किया गया है। विकसित देशों में माध्यमिक स्तर पर अच्छी संख्या में अनुभवजन्य अध्ययन किए गए हैं। लेकिन भारत में कुछ अध्ययनों को छोड़कर, सरकारी और निजी स्कूलों के बीच सीधे उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण करें। वर्तमान में देश में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में निजी स्कूलों का एक सामान्य चलन है।

किसी भी औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षा की मुख्य चिंता उसकी गुणवत्ता रही है। शिक्षा का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रत्येक हितधारक इसकी गुणवत्ता के बारे में चिंतित है। अभिभावक या माता-पिता, उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अपने बच्चों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली शिक्षा के साथ शिक्षित करना चाहते हैं, जो बजट की कमी के अधीन उनके बच्चों द्वारा प्राप्त की जाने वाली डिग्री

www.ignited.in

के लिए बेहतर मूल्य जोड़ देगा। लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से हमारा क्या तात्पर्य है? इस गुण को कैसे प्राप्त किया जाता है? निजी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता की क्या स्थिति है? यह अध्ययन पुणे शहर के निजी अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है।

विश्व बैंक ने सुझाव दिया कि 'पहुँच में सुधार करने का सबसे अच्छा तरीका गुणवत्ता में सुधार करना है जो माता-पिता के साथ-साथ बच्चों के दृष्टिकोण से स्कूल आने या स्कूल में रहने को अधिक आकर्षक विकल्प बना देगा। इसके अलावा, गुणवत्ता में सुधार के प्रयासों में वृद्धि होगी सार्वजनिक व्यय की दक्षता और माता-पिता को बच्चों की शिक्षा के लिए योगदान करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

माध्यमिक शिक्षा व्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास के लिए सर्वोपरि है। ऐसे में यह भारत में एक प्रमुख चिंता का क्षेत्र है। यद्यपि माध्यमिक शिक्षा, वर्तमान में शिक्षा में एक प्राथमिकता वाला क्षेत्र है, यह क्षेत्र शैक्षिक अनुसंधान में उपेक्षित रहा है। विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक-स्थिति (एस-ई-एस), वर्ग आकार और उपलब्धि जैसे अन्य चर के संबंध में स्कूल इनपुट के क्षेत्र पर भारत में बड़े पैमाने पर शोध नहीं किया गया है। विकसित देशों में माध्यमिक स्तर पर अच्छी संख्या में अनुभवजन्य अध्ययन किए गए हैं। लेकिन भारत में कुछ अध्ययनों को छोड़कर, सरकारी और निजी स्कूलों के बीच सीधे उपलब्धि का तुलनात्मक विश्लेषण करें। वर्तमान में देश में शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में निजी स्कूलों का एक सामान्य चलन है। साथ ही, शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर अनुसंधान गतिविधि की गुणवत्ता होती है।

इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में अकादमिक उपलब्धि बच्चे के भविष्य का सूचकांक बन गई है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक रही है। यह भी एक प्रमुख लक्ष्य है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति से सभी संस्कृतियों में करने की अपेक्षा की जाती है। शैक्षणिक उपलब्धि एक प्रमुख तंत्र है जिसके माध्यम से किशोर अपनी प्रतिभा, क्षमताओं और दक्षताओं के बारे में सीखते हैं जो कैरियर की आकांक्षाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं (लेंट. एट अल. 2000)2 शैक्षणिक उपलब्धि और कैरियर की आकांक्षाएं किशोरावस्था में अक्सर सहसंबद्ध होती हैं (अबू-हिलाल, 2000) 3. क्रो एंड क्रो (1969)4 ने अकादमिक उपलब्धि को उस सीमा के रूप में परिभाषित किया है, जिस हद तक सीखने के किसी दिए गए क्षेत्र में निर्देशों से लाभ प्राप्त करने वाला शिक्षार्थी उस सीमा तक परिलक्षित होता है, जिस हद तक उसे कौशल या ज्ञान प्रदान किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. जेंडर के आधार पर सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

2. सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों में स्कूल इनपुट का अध्ययन करना।

शिक्षा का अर्थ और परिभाषा

शिक्षा को ज्ञान का समुद्र कहा जाता है जो विषय की विभिन्न धाराओं को वहन करती है जो हमारे राष्ट्र को मजबूत करने के लिए समुद्र में एक साथ विलीन हो जाती है। इन धाराओं के बिना छात्रों के लिए गणना का मतलब, भाषा की अभिव्यक्ति के तरीके, इतिहास, विज्ञान हमारे दैनिक जीवन से कैसे संबंधित है आदि जानना मुश्किल होगा। कोठारी आयोग की रिपोर्ट में शिक्षा की भूमिका के बारे में बताया गया है। ज्ञान और समझ और मानव संसाधनों के लिए रुचियों, दृष्टिकोण और मूल्यों को विकसित करने के लिए और टॉम में इन संसाधनों, गुणों को इष्टतम संभव स्तर प्राप्त करने के लिए भौतिक संसाधनों का उपयोग करने के लिए बनाते हैं।

'शिक्षा' की अवधारणा अभी भी मूल्यांकन की प्रक्रिया में है और यह प्रक्रिया शाश्वत है। बदलती स्थिति हमेशा प्रचलित शैक्षिक आवश्यकताओं के सकारात्मक दृष्टिकोण की मांग करेगी। चूंकि संस्कृति प्रकृति में गतिशील है, शिक्षा मूल्यों, सामाजिक मानदंडों और नैतिकता को बढ़ावा देती है जो सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किए जाते हैं और एक विशेष समय पर मूल्यवान होते हैं, उदाहरण के लिए, वर्तमान समय में विश्व वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जांच की भावना और सहयोग की आदत है। वांछनीय मूल्यों के रूप में स्वीकार किया। इसलिए शिक्षा को इन मूल्यों को लोगों के मन में बिठाना चाहिए। दूसरे शब्दों में शिक्षा के अर्थ को इस प्रकार समझाया जा सकता है - शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को पर्यावरण के साथ स्वयं को समायोजित करने में सक्षम बनाती है। अलग-अलग देशों में यह माहौल अलग है। पर्यावरण के भी विभिन्न पहलू हैं-सामाजिक, भौतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि। विचारकों ने शिक्षा को पर्यावरण के किसी न किसी पहलू में परिभाषित किया है।

प्राथमिक शिक्षा का विकास

भारतीय शिक्षा प्रणाली में तीन महत्वपूर्ण कालखंड शामिल हैं जैसे I) प्राचीन और मध्यकालीन भारत में शिक्षा II) ब्रिटिश भारत में शिक्षा III) स्वतंत्रता के बाद के युग में शिक्षा। निम्नलिखित पैराग्राफों में शोधकर्ता ने इन तीन अवधियों के अनुसार प्राथमिक शिक्षा के विकास की संक्षिप्त समीक्षा की है।

भारत में प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता

वर्ष 1950 में, जब भारत के संविधान को अपनाया गया था, शिक्षा को एक बुनियादी व्यक्तिगत अधिकार के रूप में मान्यता दी गई थी। राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत, अनुच्छेद 45 में कहा गया है कि ष्राज्य इस संविधान के प्रारंभ से 10 वर्ष की अवधि के भीतर, सभी बच्चों के लिए 14 वर्ष की आयु पूरी होने तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा।ष् सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने की देश की प्रतिबद्धता के अनुरूप, स्वतंत्रता के बाद की अवधि में, विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, शैक्षिक सुविधाओं का जबरदस्त विस्तार हुआ है। भारत में प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 1950-51 में 2.2 लाख से बढ़कर 2004-5 में लगभग 7 लाख हो गई है। इसके अलावा वर्तमान में लगभग 3 लाख अनौपचारिक शिक्षा केंद्र 9 से 142 आयु वर्ग के स्कूली बच्चों को प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इस विस्तार ने निश्चित रूप से प्राथमिक स्तर की शिक्षा को एक बड़े वर्ग के लिए अधिक आसानी से सुलभ बनाने में मदद की है। बाल बच्चे।

प्राथमिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा की पहली सीढ़ी है। गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बच्चों में पढ़ने, लिखने और अंकगणित के बारे में बुनियादी ज्ञान को शामिल करना है। यह अपेक्षा की जाती है कि प्राथमिक स्तर की शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी करने के बाद, एक बच्चा पढ़ने, लिखने और साधारण अंकगणितीय समस्या को हल करने में सक्षम होना चाहिए। आज भारत में प्राथमिक शिक्षा का बहुत ही निराशाजनक परिदृश्य है। भाषा और गणित में छात्रों की सीखने की उपलब्धि (अर्थात गुणवत्ता) को मापने के लिए भारत के सभी राज्यों (केंद्र शासित प्रदेशों, मिजोरम और सिक्किम को छोड़कर) में प्राथमिक स्कूलों में दी जाने वाली प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता के संबंध में कई अध्ययन किए गए। एक शोध अध्ययन के अनुसार - भारत में प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करने के बाद 11 प्रतिशत छात्र कुछ भी नहीं पहचान पा रहे थे, 14.1 प्रतिशत केवल अक्षर पहचानते थे, 14.9 प्रतिशत एक शब्द पढ़ सकते थे, और 17 प्रतिशत कहानी का पैराग्राफ पढ़ सकते थे और 42.8 प्रतिशत पूरी कहानी पढ़ सकते हैं। निम्न तालिका इस तथ्य पर प्रकाश डालती है।

माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि

शैक्षणिक उपलब्धि को सभी शैक्षणिक विषयों में, कक्षा में और साथ ही पाठ्येतर गतिविधियों में उत्कृष्टता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसमें खेल, व्यवहार, आत्मविश्वास, संचार कौशल, समय की पाबंदी, कला, संस्कृति और इसी तरह की उत्कृष्टता शामिल है।

इस अत्यधिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में अकादमिक उपलब्धि बच्चे के भविष्य का सूचकांक बन गई है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक प्रक्रिया के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों में से एक रही है। यह भी एक प्रमुख लक्ष्य है। जिसे प्रत्येक व्यक्ति से सभी संस्कृतियों में करने की अपेक्षा की जाती है। शैक्षणिक उपलब्धि एक प्रमुख तंत्र है जिसके माध्यम से किशोर अपनी प्रतिभा, क्षमताओं और दक्षताओं के बारे में सीखते हैं जो कैरियर की आकांक्षाओं के विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं (लेंट एट अल। 2000)[15] किशोरावस्था में शैक्षणिक उपलब्धि और कैरियर की आकांक्षाएं अक्सर सहसंबद्ध होती हैं (अबू-हिलाल, 2000) [16] क्रो एंड क्रो (1969)[17] ने अकादमिक उपलब्धि को उस सीमा के रूप में परिभाषित किया है, जिस हद तक सीखने के किसी दिए गए क्षेत्र में निर्देशों से लाभ प्राप्त करने वाला शिक्षार्थी उस सीमा तक परिलक्षित होता है, जिसमें उसे कौशल या ज्ञान प्रदान किया गया है।

स्कूल इनपुट

वर्तमान में स्कूल का आकार न्यू साउथ वेल्स शैक्षिक क्षेत्र में चिंता का विषय है। कुछ छोटे हाई स्कूल आज आवश्यक पाठ्यक्रम की चौड़ाई प्रदान करना जारी रख सकते हैं या नहीं, इस संदर्भ में स्कूल के आकार की समीक्षा करना, स्कूल शिक्षा के महानिदेशक डॉ केन बोस्टन द्वारा प्रस्तावित सुधार एजेंडा पर एक आइटम था, जल्द ही एक नए पांच पर हस्ताक्षर करने के बाद - सरकार के साथ साल का अनुबंध। इस कदम के राजनीतिक और शैक्षणिक निहितार्थ हैं। आलोचक इस मकसद को विशुद्ध रूप से आर्थिक रूप से देखेंगे: चल रहे खर्चों को बचाने के लिए छोटे स्कूलों को बंद करना। वे स्कूल के आकार के बारे में बहस की तुलना एनएसडब्ल्यू (1960-1980) में व्योम योजना से कर सकते थे, जिसने एक हजार से अधिक छात्रों के बड़े माध्यमिक विद्यालयों की ओर एक संक्रमण लाया। हालांकि, शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को हाल ही में विक्टोरिया में लगभग एक हजार छोटे स्कूलों को जबरन बंद करने और नौकरियों से जुड़े कानूनों को याद करने

की अधिक संभावना है। तथापि, विद्यालय का आकार शैक्षणिक उपलब्धि से किस प्रकार संबंधित है? क्या अन्य छात्र और स्कूल चर के लिए नियंत्रण करने के बाद संबंध बदल जाता है?

पिछले तीन दशकों में ऑस्ट्रेलिया और विदेशों में स्कूल के आकार और माध्यमिक स्तर पर शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंधों पर बहुत शोध किया गया है। इस अध्ययन में दो विरोधी दृष्टिकोणों में से एक को अपनाने की प्रवृत्ति थी और विरोधाभासी सिफारिशें मिलीं। पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं पर ध्यान केंद्रित करने वाला पहला परिप्रेक्ष्य लेने वाले शोधकर्ता (कॉनेंट, 1959)। उनके तर्क इस आधार पर थे कि जैसे-जैसे स्कूलों में नामांकन बढ़ता गया, वैसे-वैसे स्कूलों का बजट भी बढ़ता गया, और परिणामस्वरूप, छोटे स्कूलों के लिए धन का अधिक कुशल उपयोग जारी किया जा सकता था। बड़े स्कूलों में अधिक संसाधन अवसर थे, बेहतर बाजार प्रभाव था और वे छात्रों को अधिक विविध और विविध पाठ्यक्रम, बेहतर योग्य शिक्षक और अधिक बेहतर स्कूल भौतिक वातावरण और सुविधाएं प्रदान करने में सक्षम थे (हॉलर, भिक्षु, भालू, ग्रिफिथ और मॉस, 1990)[29] इस तरह के विचारों को नीति निर्माताओं के बीच व्यापक समर्थन मिला।

शिक्षकों में गुण

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सुधार की योजना में एक शिक्षक अब तक का सबसे प्रभावशाली तत्व है। उसके व्यक्तित्व के चारों ओर प्रगति की आकृति और दर घूमती है। स्कूली बच्चों के लिए, जो वास्तव में सबसे प्रभावशाली आयु वर्ग में हैं, शिक्षक एक आदर्श है। शिक्षक विद्यालय प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसकी सक्रिय भागीदारी के बिना विद्यालय का गुणात्मक विकास संभव नहीं है। यह हमेशा महसूस किया गया है कि एक अच्छा शिक्षक दिया जाने से अच्छी शिक्षा और ईमानदारी में मदद मिलती है, यह देखने के लिए कि शिक्षा वास्तव में मूल्य उन्मुख हो रही है। ईएफए पर विश्व सम्मेलन (जोमटियन, थाईलैंड, 1990) और ईआरए पर विश्व मंच ने मान्यता दी कि स्कूल के नए कार्य विभिन्न प्रकार के कौशल वाले शिक्षकों के लिए बुलाते हैं। एक शिक्षक को अब किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखा जाता है जो विभिन्न विषयों पर सिर्फ पाठ देता है, लेकिन किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसके पास बच्चों में विभिन्न सीखने की प्रक्रियाओं को व्यवस्थित करने, प्रोत्साहित करने, मूल्यांकन करने और बढ़ावा देने और जब भी आवश्यक हो उपचारात्मक उपाय करने की क्षमता और क्षमता है। शिक्षकों को सही दृष्टिकोण विकसित करने, अपना काम और अपने कार्यों को करने के लिए तैयार रहना चाहिए। समर्पण की एक स्थायी भावना और एक प्रतिबद्धता के साथ अपने काम और अपने कार्यों को करने के लिए। यह शिक्षण की गुणवत्ता है जो शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करती है और इसलिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षित शिक्षकों की भर्ती वैश्वीकरण के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

शिक्षा के मानकों को बढ़ाने और उन्हें लगातार सुधारते रहने के लिए शिक्षकों को सर्वोत्तम संभव पेशेवर तैयारी प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षक की प्रभावशीलता को तैयार करने के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षा का एक ठोस कार्यक्रम आवश्यक है जो सीधे निम्नलिखित दक्षताओं से संबंधित है:

1. विषय सामग्री के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं का गहन ज्ञान जिसे उसे पढ़ाना है।
2. बच्चे के मनोविज्ञान का ज्ञान, शिक्षाशास्त्र के सिद्धांत और कक्षा प्रबंधन।
3. बुद्धि के वर्ग स्तर पर ज्ञान का संचार करने की क्षमता।
4. कई शिक्षण उपकरणों को विकसित करने और उनका उपयोग करने की क्षमता।
5. निर्देशात्मक सामग्री और ऑडियो-वीडियो एड्स को विकसित करने और उपयोग करने की क्षमता।
6. किसी पाठ की विषयवस्तु की योजना बनाने और उसे व्यवस्थित करने की योग्यता।
7. छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों का पता लगाने और तदनुसार शिक्षण प्रक्रियाओं को समायोजित करने की क्षमता।

सामाजिक आर्थिक स्थिति

सामाजिक आर्थिक स्थिति व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्थिति उसकी प्रगति के रास्ते खोलती है। बुद्धि, अभिवृत्तियाँ, अभिरुचियाँ और यहाँ तक कि रुचियाँ भी व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से प्रतिरूपित होती हैं। सामाजिक आर्थिक स्थिति एक व्यक्ति को पुरस्कार और दंड दोनों देती है। चौधरी एट अल। (1998)। सामाजिक आर्थिक स्थिति उस स्थिति को संदर्भित करती है जो एक व्यक्ति और परिवार प्रचलित औसत मानकों, सांस्कृतिक कब्जे और समुदाय की समूह गतिविधि मंड भागीदारी के संदर्भ में रखता है। सामाजिक

आर्थिक स्थिति में समूह में व्यक्ति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति दोनों शामिल हैं। उपलब्धि में भिन्नता बच्चों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में अंतर, माता-पिता द्वारा दिए गए विभेदक व्यवहार, माता-पिता के शैक्षिक स्तर और परिवेश के प्रभाव आदि के कारण भी होती है। व्यक्ति के विकास के विभिन्न पहलुओं पर सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव ने विशेष रूप से शिक्षाविदों का ध्यान आकर्षित किया है। व्यक्तिगत सफलता और असफलता को उसके अध्ययन, आत्म-अवधारणा और अध्ययन की आदतों के लिए प्रदान की गई सुविधाओं और वातावरण से भी आंका जा सकता है। जैसा कि बताया गया है कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्थिति वाले बच्चे न केवल मेधावी होते हैं बल्कि उन्हें बौद्धिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से विकसित होने के बेहतर अवसर भी प्रदान किए जाते हैं। घर में बौद्धिक वातावरण के प्रकार का निश्चित रूप से बच्चे की स्कूली उपलब्धि पर प्रभाव पड़ेगा और यह बौद्धिक वातावरण माता-पिता के बौद्धिक स्तर, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, आय, परिवार के आकार आदि से निर्धारित होता है। एक व्यक्तिगत किशोरावस्था का जीवनकाल दुनिया भर में बहुत सी चीजों से अत्यधिक प्रभावित होता है। किशोर समाज, सामाजिक आर्थिक स्थिति, आत्म अवधारणा, अध्ययन की आदतों, भावनात्मक परिपक्वता आदि से अत्यधिक प्रभावित होते हैं जो किशोरावस्था की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ा सकते हैं या हाई स्कूल अवधि में किशोरावस्था की शैक्षणिक उपलब्धि को बाधित कर सकते हैं।

शिक्षा में निजी क्षेत्र की भूमिका

वर्तमान अनुमानों के अनुसार, सभी स्कूलों में से 80: सरकारी स्कूल हैं जो सरकार को शिक्षा का प्रमुख प्रदाता बनाते हैं। हालांकि, सार्वजनिक शिक्षा की खराब गुणवत्ता के कारण, 27: भारतीय बच्चे निजी तौर पर शिक्षित हैं। कुछ शोधों के अनुसार, निजी स्कूल अक्सर सरकारी स्कूल की इकाई लागत के अंश पर बेहतर परिणाम प्रदान करते हैं।

हालांकि, अन्य लोगों ने सुझाव दिया है कि निजी स्कूल सबसे गरीब परिवारों को शिक्षा प्रदान करने में विफल रहते हैं, चुनिंदा स्कूलों का केवल पांचवां हिस्सा है और अतीत में उनके विनियमन के लिए अदालत के आदेशों की अनदेखी की गई है। उनके पक्ष में, यह बताया गया है कि निजी स्कूल पूरे पाठ्यक्रम को कवर करते हैं और विज्ञान मेले, सामान्य ज्ञान, खेल, संगीत और नाटक जैसी पाठ्येतर गतिविधियों की पेशकश करते हैं। निजी स्कूलों में छात्र शिक्षक अनुपात बहुत बेहतर है (सरकारी स्कूलों के लिए 1:31 से 1:37 और निजी स्कूलों में अधिक शिक्षक महिलाएं हैं। इस बात पर कुछ असहमति है कि किस प्रणाली में बेहतर शिक्षित शिक्षक हैं। नवीनतम डीआईएसई सर्वेक्षण के अनुसार, अप्रशिक्षित शिक्षकों (पैरा-शिक्षकों) का प्रतिशत निजी में 54.91: है, जबकि सरकारी स्कूलों में 44.88: और सरकारी स्कूलों में केवल 43.44: है। स्कूल बाजार में प्रतिस्पर्धा तीव्र है, फिर भी अधिकांश स्कूल लाभ कमाते हैं।

उपसंहार

स्वतंत्रता के दशकों के बाद भारत में शिक्षा की स्थिति का उचित मूल्यांकन जरूरी हो गया है क्योंकि शैक्षिक विकास जनता में उत्पन्न अपेक्षाओं का जवाब देना था, दोनों मात्रात्मक और गुणात्मक शिक्षा इस देश में प्रचलित स्कूल प्रणाली पर निर्भर करती है। क्योंकि स्कूल ऐसे संस्थान हैं जो बच्चों के जीवन के निर्माण काल में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 3 रुपये का ज्ञान देने के अलावा। स्कूलों, सांस्कृतिक विरासत, संचित ज्ञान, मूल्यों और कौशल के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रेषित किया जाता है। इस बुनियादी स्कूली शिक्षा प्रक्रिया ने शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है और हमारे जीवन के सभी चेंज ज.ज में बहुत सारे बदलाव ला रही है। इन सभी परिवर्तनों के साथ तालमेल रखने के लिए, स्कूली शिक्षा प्रक्रिया में उद्देश्यों, शिक्षण और प्रबंधन और प्रशासन के चरमोत्कर्ष पद्धति के संदर्भ में भी एक बड़ा बदलाव आया है। स्कूली शिक्षा संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण खंड है जो व्यक्ति के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। ऐसे में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर मानव जीवन के सभी पहलुओं में सुधार लाने के लिए विशेष जोर दिया जाना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा माध्यमिक और उच्च शिक्षा के लिए भी एक ठोस आधार प्रदान करती है। दूसरी ओर माध्यमिक शिक्षा संपूर्ण शिक्षा प्रणाली में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह व्यक्ति के व्यापक विकास का आधार बनती है माध्यमिक शिक्षा को उच्च शिक्षा की प्रारंभिक शिक्षा कहा जाता है और इसकी गुणवत्ता का उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर स्वाभाविक प्रभाव पड़ता है। शिक्षा यह नई जानकारी सीखने, पुराने कौशल में महारत हासिल करने, करियर विकल्पों का पूर्वावलोकन करने, खेलों में भाग लेने और दोस्तों के साथ मिलने के अवसर प्रदान करता है। यह एक महत्वपूर्ण जीवन संक्रमण प्रदान करता है क्योंकि युवा बचपन की साधारण दुनिया की सुरक्षा से बड़े संगठित वातावरण में जाते हैं।

संदर्भ

1. हारून, पीजी, मारिहाल, वी.जी. और मतलेशे, आर.एन. (1969), "ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के लिए एक सामान्य सामाजिक-आर्थिक स्थिति पैमाना"। अनुसंधान मोनोग्राफ, 3, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़।

2. बीबी सीई (2007)। प्राथमिक शिक्षा का आकलन, योजना में एक गाइड, लंदन के सहयोग से शैक्षिक अनुसंधान परिषद: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. चक्रवर्ती, एस.ए. (2004)। प्राथमिक शिक्षा: गुणवत्ता पहेली, IDPAD, विकास में विकल्प पर इंडोडच कार्यक्रम, वॉल्यूम। 3 (11), आईसीएसएसआर: नई दिल्ली।

4. डी.आर. वीणा, (1988)। शिक्षा प्रणाली: समस्याएं और संभावनाएं, आशीष पब्लिशिंग हाउस: नई दिल्ली।

5. प्राइमरी स्कूल सुधार के लिए एक्सटेंशन सेनध्आइस। (1963)। विस्तार कार्यक्रम के सिद्धांत और अभ्यास, एनसीईआरटी: नई दिल्ली

6. फीग्नबाम, ए.वी. (1982)। शिक्षा में उत्कृष्टता की खोज में, हार्पर और रो: न्यूयॉर्क

7. गाडगिल, (1945)। पुणे शहर में शैक्षिक विकास, पुणे सामाजिक-आर्थिक सर्वेक्षण भाग-I, प्रकाशन संख्या। 12, गोखले राजनीति और अर्थशास्त्र संस्थान: पुणे।

8. हैटर, ई. (1999)। स्कूल व्यय और शिक्षा की गुणवत्ता के बीच संबंध, सार्वजनिक शिक्षा सूचना प्रबंधन प्रणाली (आरईआईएमएस), टेक्सास: यूएसए पर अध्ययन रिपोर्ट।

9. जैन, ए. (1981)। महाराष्ट्र में अनिवार्य प्रारंभिक शिक्षा की योजना, आई.आई.ई.: पुणे।

10. कदम एल.एम. (199 जी.)अक्टूबर), प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य तैयार करना, एनसीईआरटी: नई दिल्ली।

11. मल्होत्रा, पीएल, बी.एस. प्रकाश और मिश्रा सी.एच.के., (1988)। भारत में स्कूली शिक्षा: वर्तमान स्थिति और भविष्य की जरूरतें, एनसीईआरटी: नई दिल्ली।

12. नायक जे.पी. (1975)। इक्वेलिटी क्वालिटी एंड क्वांटिटी, द एल्युसिव ट्राएंगल इन इंडियन एजुकेशन, एलाइड पब्लिशर्स: नई दिल्ली।

Corresponding Author

Arpana Kumari*

Research Scholar, Kalinga University, Raipur